ऋग्वैदिक युग

→ 20th lecture by

Mamta Rani
History Depart.
SNSRKS COLLEGE.
SAHARSA

22-04-2020.

Scanned with CamScanner

→ ऋग्वेद में इन्द्र को पुरंदर कहा गया है जिसका अर्थ है दुर्गों को तोड़ने वाला। आर्य लोग हर जगह जीतते गए क्योंकि क्योंकि उनके पास अश्वचलित रथ थे और और उन्होंने पश्चिम एशिया और भारत में पहले-पहल इन रथों को प्रचलित किया।

→ आर्य सैनिकों के पास शायद कवच और अन्य अच्छे अस्त्र भी थे। वैदिक आर्यों को दो तरह के संघर्षों का सामना करना पड़ा। एक ओर उनकी आर्य पूर्व जनों से लड़ाई हुई तो दूसरी ओर अपने ही लोगों के बीच। आंतरिक जनजातीय संघर्षों से आर्य-समुदाय दीर्घकाल तक तक जर्जर रहे।

→ परंपरानुसार तो आर्यों के पांच कबीले, अर्थात् जन थे, जिनका समुदाय पंचजन कहलाता था। लेकिन और भी जन रहे होंगे। ये जन आपस में लड़ते थे और कभी-कभी इसके लिए आर्येतर जनों का सहारा लेते थे। भरत और त्रित्सु आर्यों के शासक वंश थे और पुरोहित वशिष्ठ दोनों के समर्थक थे।

→ बाद में चलकर इस देश का नाम इसी भरत कुल के आधार पर भारतवर्ष पड़ा। इस कुल या कबीले का उल्लेख सबसे पहले ऋग्वेद में मिलता है। भरत राजवंश का दस राजाओं के साथ विरोध था जिनमें पाँच आर्य जनों के प्रधान थे और शेष आर्येतर जनों के।

→ कालांतर में भरतों और पुरुओं के बीच मैत्री हो गई और दोनों ने मिलकर नया शासक कुल बनाया जो कुरु के नाम से प्रसिद्ध हुआ। फिर जनों ने पांचालों के साथ मिलकर ऊपरी गंगा मैदान में अपना संयुक्त राज्य स्थापित किया

=×=

Scanned with CamScanner

पूर्वी अफगानिस्तान, पाकिस्तान और भारत के पंजाब तथा हरियाणा में था। ऋग्वेद में अफगानिस्तान की कुभा आदि कुछ नदियों का तथा सिंधु तथा उसकी पांच सहायक नदियों का उल्लेख है।

→ सिंधु आर्यों की सबसे प्रमुख नदी थी जिसका उन्होंने बार-बार उल्लेख किया है। उनके द्वारा उल्लिखित दूसरी नदी है सरस्वती, जिसे नदीतमा अर्थात् सर्वश्रेष्ठ नदी कहा गया है।

→ भारत में आर्य लोग कई खेपो मे आए। सबसे पहले की खेप में जो आए वे है ऋग्वैदिक आर्य जो इस उपमहाद्वेश में 1500 ईपूर्व के आसपास दिखलाई पड़ते हैं। उनका दास, दस्यु आदि के साथ संघर्ष हुआ था।

→ चूंकि दास जनों का उल्लेख प्राचीन ईरानी साहित्य में भी मिलता है इसलिए प्रतीत होता है कि वे पूर्ववर्ती आर्यों की ही एक शाखा में पड़ते थे। ऋग्वेद में कहा गया है कि भरत वंश के राजा दिवोदास ने शंबर को हराया। यहाँ दास शब्द दिवोदास के नाम मे लगता है।

→ ऋग्वेद में जो दस्यु कहे गए हैं वे संभवतः इस देश के मूलवासी थे और आर्यों के जिस राजा ने उन्हें पराजित किया वह त्रसदस्यु कहलाया। वह राजा दासों के प्रति तो कोमल था, पर दस्युओं का परम शत्रु था।

→ ऋग्वेद में दस्युहत्या शब्द का उल्लेख बार-बार मिलता है पर दास हत्या का नहीं। दस्यु लोग शायद लिंगपूजक थे और दूध के लिए पशुपालन करते थे।

Scanned with CamScanner

ऋग्वैदिक युग

20th lecture ①

→ भारत आगमन के क्रम मे आर्य लोग मध्य एशिया और ईरान पहुँचे। भारत मे आर्यो की जानकारी ऋग्वेद से मिलती है। जो हिन्द यूरोपीय भाषाओ का सबसे पुराना ग्रंथ है।

→ इनमे दस मंडल या भाग है, जिनमे मंडल मंडल 2 से 7 तक प्राचीनतम अंश है। प्रथम और दशम मंडल सबसे बाद मे जोड़े गए मालूम होते हैं। ऋग्वेद की अनेक बाते अवेस्ता से मिलती है। अवेस्ता ईरानी भाषा का प्राचीनतम ग्रंथ है। दोनो ग्रन्थो मे बहुत से देवताओ और सामाजिक वर्गो के भी नाम समान है।

मंडल	रचनाकार
द्वितीय मंडल	गृहसमद
तृतीय मंडल	विश्वामित्र
चतुर्थ मंडल	वामदेव
पंचम मंडल	अत्री
षष्ठ मंडल	भारद्वाज
सप्तम मंडल	वशिष्ठ
आठवा मंडल	कण्व एवं अंगिरस।

→ ऋग्वेद की कई ऋचाओ की रचना अपाला, घोषा, आत्रेयी, शची, लोपामुद्रा जैसी विदुषी महिलाओं ने भी किया था। इस ग्रंथ का नवा मंडल धार्मिक कृत्यो से संबंधित है और 'सोम' को समर्पित है जबकि सातवा मण्डल वरुण को समर्पित है। आठवां मंडल मिश्रित मंत्रो की उपस्थिति के कारण 'प्रगाथ मंडल' भी कहलाता है

→ भारत में आर्य भाषा भाषियो का आगमन 1500 ई०पू० से कुछ समय पूर्व हुआ। आरंभिक आर्यों का निवास

Scanned with CamScanner